हिन्दी परिषद - स्मृतियाँ

श्रीमती कल्पना भटनागर, एडमण्टन।

हिन्दी परिषद की स्थापना हुए दस वर्ष हो चुके हैं। इतना लम्बा समय बीत गया, ये सोचते सोचते मैं अपने ही खयालों में डूब गयी। उन दिनों की यादों में जब हमने हिन्दी परिषद संस्था की नींव डाली थी। हिन्दू मन्दिर में हिन्दू परिवार पूजा के लिये इकट्ठे होते थे। वहां पूजा होती व उसके बाद लोग अपने दोस्तों से मिलते और खाना खाकर सब घर चले जाते। कुछ परिवारों ने बैठ कर गोष्ठी की और इस निर्णय पर पहुंचे कि एक ऐसी संस्था होनी चाहिए जिसके द्वारा हम भारतीय सभ्यता और हिन्दी भाषा का प्रचार कर सकें। ऐसी संस्था को चलाने के लिए मेहनती लोगों की जरूरत थी और एक ऐसे स्थान की जरूरत थी जहां इस संस्था को एक रूप दे सकें।

इस संस्था को प्रारम्भ करने में वर्मा जी से काफी सहायता मिली। हम चार पांच परिवारों ने इन्डिया काउन्सिल के एक कमरे में इकट्ठे होकर एक मीटिंग की व सबने अपने अपने विचार प्रगट किये। कुछ गिने चुने लोगों को इकट्ठा कर ये संस्था बनाई गयी व कार्यकारी समिति के सदस्यों और प्रतिनिधियों का चुनाव हुआ। इस प्रकार हिन्दी परिषद का जन्म हुआ व कुछ परिवारों की मेहनत व लगन से हिन्दी परिषद अभी तक गर्व से मस्तक उठाए चल रही है।

हिन्दी परिषद की स्थापना के बाद दुबारा गोष्ठी की गयी और सब समिति के मेम्बर्स की सहायता से हिन्दी भाषा के प्रचार के लिए एक छोटे से स्कूल की स्थापना की गई। प्रारम्भ में हमने यूनिवर्सिटी ऑफ अल्बर्टा के दो कमरों में डा॰ शर्मा की सहायता से कक्षा प्रारम्भ की। स्कूल के प्रचार के लिए हिन्दू मन्दिर में इश्तहार डाले गये व रेडियो प्रोग्राम में भी एडवरटाइज किया गया। हमारी कोशिश थी कि ज्यादा से ज्यादा लोग व बच्चे इस पाठशाला का फायदा उठा सकें। पांच परिवारों की लगन से स्कूल चलता रहा व धीरे धीरे बच्चों और बड़ों की संख्या बढ़ने लगी। स्कूल का प्रारम्भ दो कमरों से हुआ था फिर हमें चार कमरे और लेने पड़े। स्कूल के साथ साथ हम लोगों ने कल्चरल प्रोग्राम्स, ट्रिप्स व वार्षिक प्रोग्राम आदि भी सम्मिलित किये गये। धीरे धीरे लोगों में भी सहायता करने की उमंग उठी व काफी नये लोगों ने आकर हिन्दी परिषद में हाथ बटाना शुरू किया। ये लेख लिखते हुए ध्यान आ रहा है कि हिन्दी परिषद के चेहरे में अब दस वर्ष पहले से कितना परिवर्त्तन आ चुका है। ये सोच कर काफी प्रसन्नता होती है कि हिन्दी परिषद के द्वारा काफी लोग फायदा उठा रहे हैं व अब तो यहां के पैदा हुए बच्चे भी हिन्दी परिषद में सहायता कर रहे हैं। यदि सभी लोग इस मेहनत और लगन से काम करते रहे तो मुझे पूरा विश्वास है कि हिन्दी परिषद प्रगति के पथ पर बढ़ती रहेगी। मुझे खासकर हिन्दी परिषद से ऐसा लगाव है जैसा कि माता को बच्चे के लिए होता है।